हिंदी

युवकभारती

बारहवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया।
दि. ३०.०१.२०२० को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी

युवकभारती

बारहवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

W9P1G8

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA APP' द्वारा पाठ्यपुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर QR Code द्वारा डिजिटल पाठ्यपुस्तक और प्रत्येक पाठ में दिए गए QR Code द्वारा आपको पाठ से संबंधित अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त दृक्-श्राव्य साहित्य उपलब्ध होगा।

प्रथमावृत्ति : २०२०
पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार - अध्यक्ष
प्रा. अनुया अजित दळवी - सदस्य
प्रा. शशि मुरलीधर निघोजकर - सदस्य
डॉ. हेमचंद्र वैद्य - सदस्य
श्रीमती दीप्ति दिलीप सावंत - सदस्य
डॉ. शैला शिरीष ललवाणी - सदस्य
डॉ. अलका सुरेंद्र पोतदार - सदस्य - सचिव

संयोजन

डॉ.अलका सुरेंद्र पोतदार,
विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

सौ. संध्या विनय उपासनी,
सहायक विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ. ममता शशि झा
सौ. स्वाती कान्हेगावकर (ब्रह्मे)
डॉ. ममता पारस मेहता
सुश्री मनीषा महादेव गावड
प्रा. सुधाकर नरहरी शिंदे
डॉ. वनश्री मुकुंद देशपांडे
श्री चंद्रशेखर मुरलीधर विंचू
डॉ. कविता सोनवणे (पवार)
श्री. श्रीप्रकाश जयकुमार मिश्रा
श्री. अंकुश शिवदास वाठारकर
श्री. ज्ञानेश्वर भगवंत सोनार
सौ. माया मल्लिकार्जुन कोथळीकर
सौ. मीना विनोद शर्मा
प्रा. सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे
डॉ. उमेश अशोक शिंदे
सौ. वनिता राजेंद्र लोणकर

मुखपृष्ठ : विवेकानंद शिवशंकर पाटील

चित्रांकन : यशवंत देशमुख

निर्मिति
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/1.00
मुद्रक : M/s. Sahil Print Art, Thane

प्रकाशक

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थी मित्रो !

आप सभी का बारहवीं कक्षा में हृदय से स्वागत ! 'युवकभारती' हिंदी पाठ्‌यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें बहुत हर्ष हो रहा है ।

भाषा और जीवन का अटूट संबंध है । देश की राजभाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा को हम अपने बहुत समीप अनुभव करते हैं । भाषा का व्यावहारिक उपयोग प्रभावी ढंग से करने के लिए आपको हिंदी विषय की ओर भाषा विषय की दृष्टि से देखना होगा । भाषाई कौशलों को आत्मसात कर हिंदी भाषा को समृद्‌ध बनाने के लिए यह पाठ्‌यपुस्तक आपके लिए महत्त्वपूर्ण एवं सहायक सिद्‌ध होगी । मूल्यांकन की दृष्टि से पाठ्‌यपुस्तक में मुख्यत: पाँच विभाग किए गए हैं । गद्‌य, पद्‌य, विशेष साहित्य, व्यावहारिक हिंदी और व्याकरण । अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से यह वर्गीकरण एवं पाठों का चयन बहुत उपयुक्त सिद्‌ध होगा ।

जीवन की चुनौतियों को स्वीकारने की शक्ति देने की प्रेरणा साहित्य में निहित होती है । इस पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से आप साहित्य की विभिन्न विधाओं की जानकारी के साथ पुराने तथा नये 'रचनाकारों' तथा उनकी लेखन शैली से परिचित होंगे । इनके द्‌वारा हिंदी भाषा के समृद्‌ध तथा व्यापक साहित्य को आप समझ पाएँगे । आपकी आयु एवं आपके भावजगत को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में संस्मरण, कहानियाँ, कुछ शेर, निबंध, एकांकी, पत्र, लोकगीत, नई कविताएँ आदि को स्थान दिया गया है । चतुष्पदियाँ भी आपको नए छंद से अवगत कराएँगी । विशेष साहित्य के अध्ययन के रूप में 'कनुप्रिया' का समावेश किया गया है । यह अंश पुस्तक की साहित्यिक चयन की विशिष्टता को रेखांकित करता है ।

व्यावहारिक व्याकरण द्‌वारा आप व्याकरण को बहुत ही सहजता से समझ पाएँगे । व्यावहारिक हिंदी विभाग में समसामयिक विषयों तथा उभरते क्षेत्रों से संबंधित पाठों को समाविष्ट किया गया है जिसके माध्यम से आप इन क्षेत्रों में व्यवसाय के अवसरों को पाएँगे । ब्लॉग लेखन, फीचर लेखन जैसे नवीनतम लेखन प्रकारों से आप यहाँ परिचित होंगे ।

आपकी विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति तथा सृजनात्मकता का विकास हो; इसे ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार की कृतियों का समावेश पाठ्‌यपुस्तक में किया गया है । अत: माना जाता है कि आप अपनी वैचारिक क्षमताओं को विकसित कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पुष्ट करेंगे । इन कृतियों की सहायता से पाठ एवं उससे संबंधित विषयों को समझने में आपको सहजता होगी । साथ ही; आपका भाषा कौशल विकसित होगा और क्षमताओं में वृद्‌धि होगी । आप सरलता से विषय वस्तु को समझ पाएँगे । आपका शब्द भंडार बढ़ेगा और लेखन शैली का विकास होगा ।

बारहवीं कक्षा में कृतिपत्रिका के माध्यम से आपके हिंदी विषय का मूल्यांकन होगा । इसके लिए आपको आकलन, रसास्वादन तथा अभिव्यक्ति जैसे प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करना होगा । प्रत्येक पाठ के बाद विविध कृतियाँ दी गई हैं जो आपका मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्‌ध होंगी । 'पढ़ते रहें, लिखते रहें, अभिव्यक्त होते रहें' और विचारपूर्वक अपनी दिशा निर्धारित कीजिए । आप सभी को उज्ज्वल भविष्य तथा यशप्राप्ति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

विवेक गोसावी
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : २१ फरवरी २०२०
भारतीय सौर : २ फाल्गुन १९४१

भाषा विषयक क्षमता

अपेक्षा यह है कि बारहवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों :

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	१. गद्‌य, पद्‌य की रसानुभूति एवं भाषा के आलंकारिक सौंदर्य को सुनना, समझना तथा सुनाना । २. विभिन्न जनसंचार माध्यमों से प्राप्त जानकारी को सुनना तथा उसका उपयोग कर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सुनाना । ३. अनूदित साहित्य को सुनना तथा अपना मंतव्य सुनाना ।
२.	भाषण–संभाषण	१. विविध कार्यक्रमों में सहभागी होना तथा कार्यक्रम का सूत्र संचालन करना । २. विभिन्न विषयों के परिसंवादों में सहभागी होकर निर्भीकता से चर्चा करना । ३. राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समकालीन विषयों को चुनकर उनपर समूह में चर्चा का आयोजन करना ।
३.	वाचन	१. व्यक्तित्व विकास के लिए विभिन्न महापुरुषों के भाषण तथा साहित्यकारों की रचनाओं का वाचन करना । २. विभिन्न क्षेत्रों के शीर्षस्थ व्यक्तियों की आत्मकथाओं का वाचन करना । ३. विविध विषयों के मूल ग्रंथों का वाचन करना ।
४.	लेखन	१. संगणक में प्रयुक्त होने वाली लिपि की जानकारी प्राप्त करते हुए उसका उपयोग करना । २. ब्लॉग लेखन, पल्लवन तथा फीचर लेखन का अध्ययन करते हुए लेखन करना । ३. विभिन्न कार्यक्रमों का संपूर्ण नियोजन करते हुए आवश्यक प्रस्तुति करने हेतु लेखन करना (Event Management) ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	१. रस (शृंगार, शांत, बीभत्स, रौद्र, अद्‌भुत) २. अलंकार (अर्थालंकार) ३. वाक्य शुद्‌धीकरण, काल परिवर्तन, मुहावरे
६.	अध्ययन कौशल	१. अंतरजाल (इंटरनेट), क्यूआर कोड, विभिन्न चैनल देखकर उनका उपयोग करना । २. पारिभाषिक शब्दावली – बैंक, वाणिज्य, विधि तथा विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को जानना, समझना तथा प्रयोग करना ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें...

प्रस्तुत पुस्तक की पुनर्रचना राष्ट्रीय शैक्षिक नीति के अनुसार की गई है। ग्यारहवीं कक्षा तक विद्‌यार्थी हिंदी भाषा तथा साहित्य द्‌वारा जो ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, इसके अतिरिक्त उन्हें नई विधाओं से परिचित कराने का प्रयास प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक में किया गया है। इस प्रयास को विद्‌यार्थियों तक पहुँचाना आपका उत्तरदायित्व है।

अध्ययन–अध्यापन का कार्य आरंभ करने के पूर्व पुस्तक में सम्मिलित समग्र पाठ्‌यांश को सूक्ष्मता तथा गंभीरता से पढ़कर आपको उसका आकलन करना है। परिपूर्ण आकलन हेतु पाठ्‌यपुस्तक का मुखपृष्ठ से लेकर मलपृष्ठ तक गहरा अध्ययन करें। प्रस्तावना, भाषा विषयक क्षमताएँ, अनुक्रमणिका, पाठ, स्वाध्याय, चित्र, कृतियाँ और परिशिष्ट आदि से स्वयं परिचित होना प्रभावी अध्यापन के लिए आवश्यक है।

युवावस्था में प्रवेश कर रहे विद्‌यार्थियों की भावभूमि को ध्यान में रखकर गद्‌य–पद्‌य पाठों का चयन किया गया है। वर्तमान समय की आवश्यकतानुसार व्यावहारिक साहित्य को भी स्थान दिया गया है जिससे विद्‌यार्थी नवीनतम विधाओं से परिचित हों। पद्‌य रचनाओं के अंतर्गत चतुष्पदियाँ, नई कविता, शेर, मध्ययुगीन काव्य के गुरुनानक, वृंद एवं लोकगीत तथा नये कवियों की कविताओं को समाविष्ट किया गया है। गद्‌य पाठों के अंतर्गत संस्मरण, कहानी, निबंध, पत्र तथा विज्ञान विषयक लेख को भी अंतर्भूत किया गया है। उपयोजित भाषा में 'ब्लॉग लेखन' को पहली बार लिया गया है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए तथा रोजगार प्राप्त करने के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी के अध्ययन की आवश्यकता है। इस उद्‌देश्य को ध्यान में रखकर पाठ्‌यपुस्तक में 'पल्लवन', 'फीचर लेखन', 'मैं उद्‌घोषक' तथा 'ब्लॉग लेखन' जैसे समसामयिक पाठ दिए गए हैं। पहली बार विज्ञानविषयक शोधपरक लेख को भी समाविष्ट किया गया है।

विशेष साहित्य के अध्ययन के अंतर्गत 'कनुप्रिया' के अंश को पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्भूत किया गया है। आज के मनुष्य को व्यथित करने वाले प्रश्न इस काव्य के

माध्यम से कवि ने उपस्थित किए हैं । विद्‌यार्थियों की संवेदनशीलता को बढ़ाने के लिए इस काव्यांश को समाविष्ट किया गया है । इस विधा का अध्यापन रोचक तथा प्रभावी ढंग से करने के लिए शिक्षक 'कनुप्रिया' को संपूर्ण रूप में पढ़ें और राधा के आंतरिक द्‌वंद्‌व से विद्‌यार्थियों को परिचित कराते हुए यह भी स्पष्ट करें कि मानव जीवन की सार्थकता युद्‌ध में नहीं बल्कि एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में है ।

पाठ्‌यपुस्तक में समाविष्ट गद्‌य, पद्‌य तथा व्यावहारिक हिंदी की सभी रचनाओं के आरंभ में रचनाकार का परिचय, उनकी प्रमुख रचनाएँ, विधा की जानकारी एवं पाठ के केंद्रीय भाव/विचार को आवश्यक मानते हुए विद्‌यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया है । परिपूर्ण तथा व्यापक अध्ययन की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के अंत में शब्दार्थ, स्वाध्याय के अंतर्गत आकलन, शब्द संपदा, अभिव्यक्ति कौशल, लघूत्तरी प्रश्न, साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान, भाषाई कौशल आदि को आकलनात्मक और रोचक ढंग से तैयार किया गया है जिससे विद्‌यार्थी परीक्षा के साथ-साथ पाठ का समग्र रूप में बोध कर सकें । आप अपने अनुभव तथा नवीन संकल्पनाओं का आधार लेकर पाठ के आशय को अधिक प्रभावी ढंग से विद्‌यार्थियों तक पहुँचा सकते हैं ।

व्याकरण के अंतर्गत ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ाए जा चुके घटकों के शेष भाग का परिचय बारहवीं कक्षा में कराया गया है । ग्यारहवीं की पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए रसों के अतिरिक्त शेष रसों का परिचय प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक में कराया गया है । अलंकार के अंतर्गत अर्थालंकार के भेद दिए गए हैं ।

पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से आप विद्‌यार्थियों में नैतिक मूल्य, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों, संवैधानिक मूल्यों का विकास होने के अवसर अवश्य प्रदान करें । पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्भूत प्रत्येक घटक को लेकर सतत मूल्यांकन होना अपेक्षित है । आदर्श शिक्षक के लिए परिपूर्ण, प्रभावी तथा नवसंकल्पनाओं के साथ अध्यापन कार्य करना अपने-आप में एक मौलिक कार्य होता है । इस मौलिक कार्य को पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से विद्‌यार्थियों तक पहुँचाने का दृढ़ संकल्प सभी शिक्षक करेंगे; ऐसा विश्वास है ।

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	नवनिर्माण	चतुष्पदी	त्रिलोचन	१-४
२.	निराला भाई	संस्मरण	महादेवी वर्मा	५-११
३.	सच हम नहीं; सच तुम नहीं	नयी कविता	डॉ. जगदीश गुप्त	१२-१५
४.	आदर्श बदला	कहानी	सुदर्शन	१६-२२
५.	(अ) गुरुबानी (आ) वृंद के दोहे	पद दोहा	गुरु नानक वृंद	२३-२६ २७-३०
६.	पाप के चार हथियार	निबंध	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	३१-३५
७.	पेड़ होने का अर्थ	नयी कविता	डॉ. मुकेश गौतम	३६-४०
८.	सुनो किशोरी	पत्र	आशारानी व्होरा	४१-४६
९.	चुनिंदा शेर	शेर	कैलाश सेंगर	४७-५०
१०.	ओजोन विघटन का संकट	लेख	डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र	५१-५६
११.	कोखजाया	अनूदित साहित्य	मूल लेखक - श्याम दरिहरे अनुवादक - बैद्‍यनाथ झा	५७-६३
१२.	* सुनु रे सखिया * कजरी	लोकगीत		६४-६८

• विशेष अध्ययन हेतु •

क्र.	पाठ का नाम	प्रस्तुति	रचनाकार	पृष्ठ
१३.	कनुप्रिया	काव्य	डॉ. धर्मवीर भारती	६९-७८

• व्यावहारिक हिंदी •

१४.	पल्लवन	एकांकी	डॉ. दयानंद तिवारी	७९-८४
१५.	फीचर लेखन	कहानी	डॉ. बीना शर्मा	८५-९०
१६.	मैं उद्घोषक	आत्मकथा	आनंद सिंह	९१-९४
१७.	ब्लॉग लेखन	आलेख	प्रवीण बर्दापूरकर	९५-९९
१८.	प्रकाश उत्पन्न करने वाले जीव	शोधपरक लेख	डॉ. परशुराम शुक्ल	१००-१०४

• परिशिष्ट •

•	मुहावरे	१०५-१०६
• •	भावार्थ : गुरुबानी, वृंद के दोहे सुनु रे सखिया और कजरी	१०७ १०८
•	पारिभाषिक शब्दावली	१०९-११०
•	रसास्वादन के मुद्दे	११०